Nature of political theory.

* कैटलिन के शब्दों में - राजनीति विज्ञान मर गया है। अब तो इसमें मात्र संस्थाओं का औपचारिक अध्ययन होता है।
* मेटलैण्ड ने भी अपनी व्यंग्यात्मक भाषा में कहा है कि "जब मैं राजनीति विज्ञान शीर्षक के अन्तर्गत परीक्षा प्रश्नों को देखता हूँ तो मुझे प्रश्नों के प्रति नहीं वरन शीर्षक के प्रति खेद होता है।

* बकल, कॉम्टे, मेटलैण्ड आदि विद्वान राजनीति विज्ञान को विज्ञान नहीं मानते हैं क्योंकि इसके कोई सुनिश्चित तथा क्रमबद्ध सिद्धान्त नहीं है तथा इसमें निरन्तरता का अभाव है।
* विज्ञान में कुछ निश्चित नियम तथा सिद्धान्त होते हैं जो सर्वमान्य तथा सार्वभौम होते हैं। राजनीति विज्ञान में ऐसा कोई नियम तथा सिद्धान्त नहीं है।
* जहाँ एक आदर्शवादी, राज्य को सर्वोच्च सत्ता को मान्यता देते हैं तो दूसरी ओर साम्यवादी तथा अराजकतावादी इसको अमान्य करते हैं।
* विज्ञान में H_2O का अर्थ प्रत्येक स्थान पर एक ही होगा, चाहे वो अमेरिका हो या भारत किन्तु राजनीतिशास्त्र में, प्रजातंत्र संघवाद, स्वतंत्रता एवम अधिकार आदि के भिन्न - भिन्न देशों में विद्वानों द्वारा भिन्न - भिन्न अर्थ लगाये जाते हैं।
* ब्राइस के शब्दों में," भौतिक विज्ञान में एक निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए बार - बार प्रयोग किया जा सकता है किन्तु राजनीति में एक प्रयोग बार - बार नहीं दोहराया जा सकता है।

* विज्ञान से सम्बन्धित विषयों के सम्बन्ध में हम निश्चित भविष्यवाणियाँ कर सकते हैं किन्तु राजनीतिविज्ञान में ऐसा संभव नहीं है।
* राजनीति विज्ञान में कार्य और कारण में निश्चित सम्बन्धों का अभाव पाया जाता है, जबकि रसायन एवम भौतिक विज्ञानों में कार्य और कारण के मध्य निश्चित सम्बन्ध पाया जाता है।
* बकल का कथन है कि-" ज्ञान की वर्तमान अवस्था राजनीति को विज्ञान मानना तो बहुत दूर रहा, यह कलाओं में भी सबसे पिछड़ी हुई कला है।"
* " राजनीति का विज्ञान बनना न तो संभव है और न ही वांछनीय।"

Rama Kant pandey
S.R.A.P. college
Bara chakiya
B.R.A.B.U (Muzaffarpur)

political Science
B.A Part (I)
paper- I